शिक्षा : शिक्षा मन्त्री के रूप में मेरे प्रयोग | पुस्तक समीक्षा

प्रेमा रघुनाथ

यह पुस्तक उस शिक्षा नीति की रूपरेखा बताती है जिसे दिल्ली में आम आदमी पार्टी (AAP) की सरकार ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान अपनाया।

शिक्षा एक ऐसा मुद्दा है, था और रहेगा जिसमें सार्वभौमिक भागीदारी होती है, फ़िर चाहे वह राय देने के लिए हो या नाराज़गी प्रकट करने के लिए। इस विषय पर सभी की अपनी-अपनी राय होती है कि क्या, कैसे, कब और क्यों पढ़ाया जाए। स्कूल अपनी सफलता की दर का विज्ञापन देते हैं और कुछ स्कूल शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम लाने की क्षमता के चलते दूसरे स्कूलों की तुलना में अधिक लोकप्रिय होते हैं- बिना इस बात को जाने या इसकी परवाह किए कि इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों की क्या दशा होती है।

किसी भी देश की शैक्षिक प्रणाली की सफलता उसके शिक्षकों के हाथों में होती है और साथ ही इस बात में भी निहित होती है कि एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए उन्हें कैसा प्रशिक्षण मिलता है; वे किस तरीक़े से पाठ्यपुस्तक की व्याख्या करते हैं; और इन पाठ्यपुस्तकों की रचना किस तरह से की जाती है। इसका एक और ज़रूरी पहलू यह भी है कि सरकार शिक्षा के समग्र विचार को कितना महत्त्व देती है: केवल दिखावे के लिए नहीं बल्कि अपनी मंशा का वास्तविक प्रमाणीकरण अपने कार्यों के माध्यम से करके।

तत्कालीन उप-मुख्यमन्त्री और शिक्षा मन्त्री, मनीष सिसोदिया की यह पुस्तक बताती है कि आम आदमी पार्टी ने शिक्षा को अपने एजेण्डे के केन्द्र में रखा और दृढ़ता से इस बात का प्रदर्शन किया कि वह मौजूदा अवरोधों को तोड़ने में शिक्षा के महत्त्व को समझती है और उसमें पूरा विश्वास करती है।

पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया गया है : द फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशन और एजुकेशन एज़ फाउण्डेशन। पहला भाग सरकारी स्कूलों के वास्तविक परिचालन से सम्बन्धित है। वे मनुष्य की क्षमता को पहले उसे एक व्यक्ति के रूप में समृद्ध होने और फलने-फूलने में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उसके बाद मनुष्य की क्षमता उसके आर्थिक विकास का साधन बनती है। लेखक बुनियादी ढाँचे, शिक्षक भर्ती, प्रशिक्षण आदि विभिन्न पहलुओं पर प्राचार्य एवं अभिभावकों से चर्चा करते हैं। पहले भाग के प्रारम्भ में बजट को बढ़ाने के बारे में चर्चा की गई है, क्योंकि परिवर्तन के संकल्प को वास्तविक व्यवहार में लाने के लिए धन की आवश्यकता होती है।

आगे के विवरण में बताया गया है कि बजट में वृद्धि के परिणामस्वरूप दिल्ली के सरकारी स्कूलों में एक बहुत ही सकारात्मक और आशावादी शैक्षिक परिदृश्य सामने आया जो भौतिक और परिचालन दोनों स्तरों पर देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए ख़स्ताहाल एवं ग़ैर-प्रेरणादायक कक्षाओं को एक नया रूप दिया गया है ताकि जो लोग उनमें सबसे अधिक समय बिताते हैं यानी शिक्षक और विद्यार्थी, उनको अधिगम के लिए उपयुक्त मनःस्थिति में लाया जा सके।

मनीष सिसोदिया के सुधार सम्बन्धी विवरण में वेतनवृद्धि और सभी हितधारकों – शिक्षकों, विद्यार्थियों और उनके माता-पिता के लिए सम्मान तथा व्यवस्था में उनकी गहरी भागीदारी शामिल है।

दूसरा भाग – एजुकेशन एज़ फाउण्डेशन - नागरिक-निर्माण की प्रक्रिया में आध्यात्मिक उन्नति की भूमिका पर ज़ोर देता है। जीवन विद्या और विपश्यना ध्यान जैसे पाठ्यक्रमों को परिवर्तन के साधन के रूप में वर्णित किया गया है। इसके अलावा हैप्पीनेस प्रोग्राम है, जो बच्चों को स्वयं को स्वीकार करने और यह समझने का महत्त्वपूर्ण कौशल सिखाता है कि सच्चा धन, आन्तरिक आनन्द और आशावाद है। इसने बच्चों की इस बात में मदद की है कि वे अपने दृष्टिकोण को बदलें और संकीर्ण एवं स्वार्थपूर्ण लक्ष्यों के बजाय स्वयं को जितना बेहतर हो सके उतना बेहतर बनाने की कोशिश करें।

यह पुस्तक एक आदर्श शिक्षा कार्यक्रम का रोचक विवरण है और अगर यह कार्यक्रम सफल होता है तथा इसे पूरे देश में लागू किया जाता है तो यह एक नवीन भारत के निर्माण के लिए ऐसे भावी नागरिक बनाने की सम्भावना जगाता है जो उपाय-कुशल, विश्वसनीय और विवेकशील होंगे। लेखन की शैली संवादात्मक है, लगता है जैसे किसी साक्षात्कारकर्ता से बात की गई हो। जो भी हो, शिक्षा एक पठनीय पुस्तक है और यदि इस पर अमल किया जाए तो और भी बेहतर होगा।

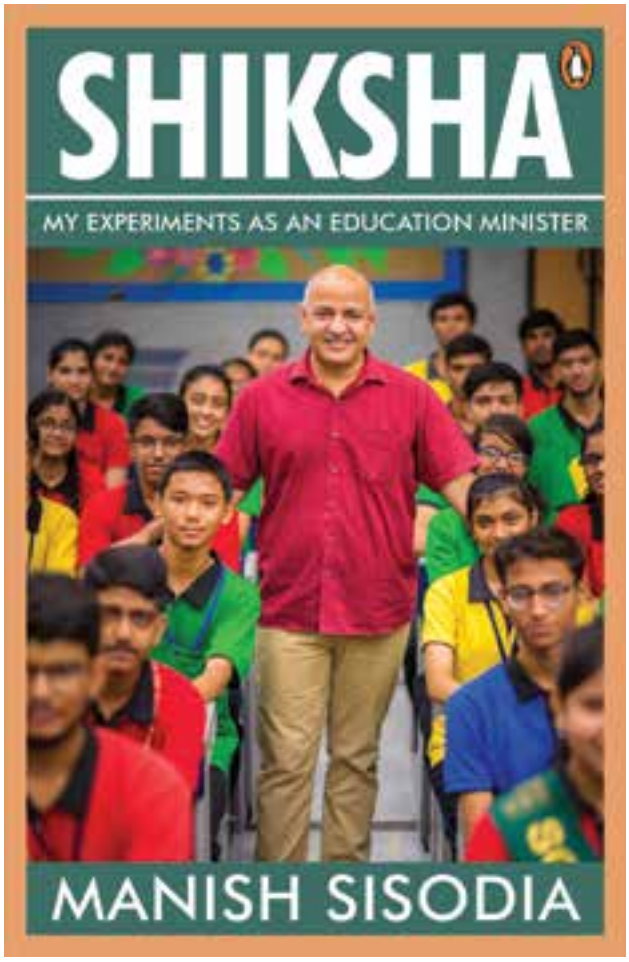

शीर्षक : शिक्षा : शिक्षा मंत्री के रूप में मेरे प्रयोग
लेखक : मनीष सिसोदिया
पेपरबैक : 208 पृष्ठ
कीमत : 222 रु.
प्रकाशक : पेंगुइन (9 सितंबर 2019)
भाषा : अँग्रेज़ी
आईएसबीएन-10 : 0143448528
आईएसबीएन-13 : 978-0143448525
Amazon.in पर उपलब्ध है।

प्रेमा रघुनाथ लर्निंग कर्व की मुख्य सम्पादक हैं। चेन्नई के सीबीएससी स्कूल और बाद में कई वर्षों तक एक आईबी स्कूल में पढ़ाने के बाद अब वे वहाँ के कुछ स्कूलों की समितियों की सदस्या हैं। उनसे prema.raghunath@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल